

जीवन और मेधस-शरीर का संबंध: मध्यस्थ दर्शन का दृष्टिकोण

साधन भट्टाचार्य

दिव्य पथ संस्थान, मानव तीर्थ,
किरितपुर, बेमेतरा, छत्तीसगढ़ (भारत),
teerthmanav@gmail.com

शोध सारांश

यह शोध पत्र मध्यस्थ दर्शन के आधार पर जीवन और मेधस युक्त शरीर के बीच संबंध की व्याख्या करता है तथा आधुनिक विज्ञान और पारंपरिक दर्शन के मध्य एक सेतु का काम करता है। मध्यस्थ दर्शन के प्रणेता श्री ए. नागराज के मूल ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन और विश्लेषण किया गया है। जीवन, चेतना और मेधस की अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए व्यवस्थित वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन से पता चलता है कि जीवन एक चैतन्य गठन पूर्ण परमाणु है जो मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि और आत्मा का संयुक्त रूप है। मेधस एक भौतिक रासायनिक तंत्रिका प्रणाली है जो जीवन के निर्देशन में कार्य करती है। संपूर्ण अस्तित्व को आठ स्पष्ट अवस्थाओं में वर्गीकृत किया गया है - पदार्थावस्था से लेकर पूर्ण जागृत मानव तक।

यह अध्ययन पहली बार जीवन और मेधस के संबंध को एक व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करता है, जिसमें विज्ञान की भौतिकवादी सोच और दर्शन की चैतन्यवादी अवधारणा का समन्वय दिखाया गया है।

यह शोध मानव विकास की तीन अवस्थाओं (अल्प जागृत, अर्ध जागृत, जागृत/पूर्णजागृत) को समझने में सहायक है और व्यक्तिगत तथा सामाजिक उन्नति के मार्ग प्रशस्त करता है।

मुख्य शब्द: मध्यस्थ दर्शन, जीवन, मेधस, चेतना, जागृति, सह-अस्तित्ववाद, ज्ञानावस्था, जीवावस्था

प्रस्तावना

1. विज्ञान - मेधस की अवधारणा

विज्ञान यह स्वीकार करता है कि कीड़े-मकोड़े से लेकर मानव तक, सभी में मेधस पूर्ण एक केंद्रीय तंत्रिका नियंत्रण प्रणाली होती है, जिससे शरीर का संचालन होता है। (Bullock & Horridge, 1965; Strausfeld, 2012; Kandel, Schwartz, & Jessell, 2013; Shepherd, 2016)। इसमें बताया गया है कि कीड़े-मकोड़े (invertebrates) में भी सुव्यवस्थित केंद्रीय तंत्रिका तंत्र पाया जाता है। (Bullock, T. H., & Horridge, G. A., 1965)। यह (Arthropod brains: Evolution, functional elegance, and historical significance) ग्रंथ दर्शाता है कि आर्थ्रोपोड्स (कीड़े-मकोड़े, मकड़ी आदि) में भी मस्तिष्क-सदृश संरचनाएँ विकसित होती हैं। आधुनिक न्यूरोसाइंस का आधारभूत ग्रंथ है, जिसमें कीड़े-मकोड़े से मानव तक की तंत्रिका प्रणाली

की तुलना की गई है (andel, E. R., Schwartz, J. H., & Jessell, T. M., 2013)। *Neurobiology* (5th ed.) में vertebrates और invertebrates दोनों के केंद्रीय तंत्रिका तंत्र का कार्यविज्ञान विस्तार से दिया गया है। इससे विज्ञान का पक्ष स्पष्ट होता है।

मध्यस्थ दर्शन (प्रणेता: श्री ए. नागराज) भी इसी तथ्य की पुष्टि करता है कि कीड़े-मकोड़े में संचालित क्रियाएं मेधस के माध्यम से नियंत्रित होती हैं। उनमें भी आहार, निद्रा, भय, मैथुन जैसे कार्य स्पष्ट होते हैं, जो शरीर और मेधस के पारस्परिक संबंध को इंगित करते हैं। (इनमें मेधस को चलाने वाला कोई नहीं रहता) पदार्थावस्था एवं प्राणावस्था की सृष्टि मेधस रहित तथा जीवावस्था व ज्ञानावस्था की सृष्टि मेधस सम्पन्न है।

2. पेड़-पौधे और जीवन की अवधारणा

धार्मिक और आदर्शवादी अध्ययन के दृष्टिकोण में यह धारणा है कि पेड़-पौधों में भी जीवन होता है। विज्ञान उन्हें "जीवित" तो मानता है, किन्तु यहाँ एक भाषिक और वैचारिक भ्रम उत्पन्न होता है, क्योंकि 'Life', 'Living' और 'Consciousness' को प्रायः एक ही अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है (Cleland & Chyba, 2002; Trewavas, 2014; Chamovitz, 2012; Nagel, 1974; नागराज, 2004)।

मध्यस्थ दर्शन से यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि "चैतन्यता" शरीर का अंग नहीं है, बल्कि एक स्वतंत्र इकाई है— यह बिंदु मध्यस्थ दर्शन (विभिन्न वांगमयों) में विशेष रूप से स्पष्ट किया गया है। वैज्ञानिक समुदाय और मनोवैज्ञानिकों के बीच इस विषय में मतभेद आज भी बने हुए हैं।

3. जीवन की वास्तविक परिभाषा: मध्यस्थ दर्शन के अनुसार

धार्मिक, आदर्शवादी अध्ययन और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भिन्न मध्यस्थ दर्शन के अनुसार "जीवन" कोई भौतिक/भौतिक रासायनिक इकाई नहीं है, बल्कि एक चैतन्य इकाई है, जो मनुष्य में विचार, निर्णय और अनुभूति की क्षमता प्रदान करती है।

चेतन इकाई तात्त्विक रूप में एक गणपूर्णता प्राप्त परमाणु है। परमाणु में विकास होने पर रूप परिवर्तन के साथ गुण परिवर्तन भी होता है। गणपूर्णता का तात्पर्य यह है कि परमाणु के गण में जितने परमाणु अंशों की सहज व्यवस्था है, उन सभी परमाणु अंशों के सम्मिलन से ही उसकी पूर्णता होती है। गणपूर्ण स्थिति में उस परमाणु में न तो कोई अंश बढ़ता है और न ही कोई अंश घटता है। इसी कारण गणपूर्ण परमाणु में स्थिरता सहित असीम शक्ति और बल की संपन्नता रहती है। गणपूर्ण परमाणु (जीवन) में मात्रात्मक परिवर्तन के बिना ही गुणों में परिवर्तन होता है। यह भ्रांत अवस्था से जागृति अवस्था तक बना रहता है। जीव और मानव प्रकृति जड़-चेतन का संयुक्त साकार रूप होने के कारण ही जीवन के द्वारा शरीर में जीवन्तता प्रकट होती है। अस्तित्व स्वयं सहअस्तित्व होने के कारण ही प्रकृति परस्पर पूरकता के रूप में धारण कर विद्यमान है। यही विकास की प्रधान प्रक्रिया है। इसी क्रम में जड़-चेतन का संयुक्त प्रकाशन भी एक स्वाभाविक स्थिति है। यही धारणीय क्रम और व्यवस्था भी है। प्रकृति में प्रत्येक इकाई

सहअस्तित्वरत है क्योंकि अस्तित्व स्वयं सहअस्तित्व है। इसी कारण जड़ और चेतन में सहअस्तित्व, (जीवन-गणपूर्ण परमाणु) और शरीर रचना (प्राणकोशिकाओं की रचना) में सहअस्तित्व विद्यमान है। सहअस्तित्व का अर्थ है परस्पर पूरकता। इस प्रकार अस्तित्व ही विकास है, विकास ही क्रम है, क्रम ही व्यवस्था है और व्यवस्था ही स्वयं धारणीय है (समाधानात्मक भौतिकवाद, 2009, पृष्ठ - 29)।

वैज्ञानिक मान्यताओं से भिन्न श्री ए नागराज के अनुसार मध्यस्थ प्रक्रिया अपने-आप में मध्यस्त बल और शक्ति के रूप में विद्यमान है। इसकी स्थिति परमाणु के केंद्र में होती है और यह अविरल रूप से सम-विपरीत शक्तियों पर धारण किए रहती है। चेतन प्रकृति और जड़ प्रकृति में मूलतः यही अंतर है कि जड़ प्रकृति में परमाणु अणु और अणु-संरचित समूहों के रूप में प्राप्त होते हैं, जबकि चेतन प्रकृति केवल परमाणु के रूप में ही विद्यमान रहती है। चेतन परमाणु में ही अजर शक्तियाँ निहित होने के कारण प्रत्येक इकाई अपने में जीवन-वैभव और महिमा का अनवरत प्रकाशन करती है। जड़ शक्तियाँ क्षरणशील होती हैं, जबकि चेतन शक्तियाँ अजर और अविनाशी होती हैं। इसी कारण चेतन इकाई में परिवर्तन और प्रतिसंवेदन स्वाभाविक रूप से होता है (समाधानात्मक भौतिकवाद, 2009, पृष्ठ – 48-49)।

श्री ए नागराज के अनुसार जड़ शक्तियों में विद्युत-चुंबकीय बल, गुरुत्वाकर्षण बल, सामान्य (क्षीण) आकर्षण और सबल आकर्षण सम्मिलित हैं। इसके विपरीत चेतन शक्तियों में मन, वृत्ति, चित्त और बुद्धि जैसी क्षमताएँ निहित होती हैं। इसी क्रम में मध्यस्त बल चेतन इकाई को आस्था और अनुभूति का आधार प्रदान करता है। इस प्रकार, मध्यस्थ प्रक्रिया के अनुरूप ही प्रत्येक इकाई में स्वभावगत गुण विद्यमान होते हैं। परिणामस्वरूप उसमें अग्रिम विकास की संभावना और विकास-क्रम में भागीदारी सहज रूप से उपलब्ध हो जाती है।

जड़ परमाणु में जड़ शक्तियाँ और चैतन्य परमाणु (जीवन) में चैतन्य बल और शक्तियाँ

क्रमांक	जड़ शक्तियाँ (बल) जड़ परमाणु में	चैतन्य परमाणु (जीवन) में चेतन शक्तियाँ (बल)	चैतन्य परमाणु (जीवन) चेतन शक्तियाँ (शक्ति)
1.	विद्युत-चुंबकीय बल	मन	आशा
2.	गुरुत्वाकर्षण बल	वृत्ति	विचार
3.	सामान्य (क्षीण) आकर्षण	चित्त	चित्रण/इच्छा
4.	सबल आकर्षण	बुद्धि	संकल्प
5.	मध्यस्त बल	आत्मा	अनुभूति

स्रोत: समाधानात्मक भौतिकवाद, 2009

श्री ए नागराज के अनुसार **जीवन एक गठन पूर्ण परमाणु है।** यह सभी प्रकार की भौतिक और रासायनिक क्रियाकलाप (भार बंधन और अणु बंधन) से मुक्त है इसलिए यह निरंतर है, अमर है। यह (जीवन) पाँच अविभाज्य अंगों से युक्त होता है: मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि, और आत्मा। (समाधानात्मक भौतिकवाद)

यह जीवन चार अवस्थाओं में हो सकता है:

श्री ए नागराज के अनुसार पूर्ण जागृत, जागृत अर्ध जागृत, अल्प जागृत तथा अजागृत भेद से है। इसे ही पूर्ण चेतन, चेतन, अर्ध चेतन, अल्प चेतन तथा अचेतन के नाम से भी संबोधित किया गया है (मानव व्यवहार दर्शन, 2011)

अजागृत: जीव अवस्था में

अल्प जागृत — जब जीवन शरीर (brain/मेधस) से प्रभावित रहता है। इससे दुःखी रहता है लेकिन इसकी पीड़ा से छूटना चाहता है।

अर्ध-जागृत — जब जीवन में सत्य को समझने की जिज्ञासा प्रारंभ होता है और इसे अपना लक्ष्य मानकर सारे कार्य करता है।

जागृत / पूर्ण जागृत — जब जीवन संपूर्ण समझ के साथ स्वतंत्र रूप से मेधस के माध्यम से शरीर का संचालन करता है। व्यवस्था में भागीदारी करता है और इसका स्रोत बनता है।

जीवावस्था में, मन शरीर को जीने की आशा पूर्वक जीवंत बनाये रखते हुए वंशानुक्रमीय विधि से कार्य करता है। अतः इसे अजागृत की संज्ञा है। जीवावस्था में बौद्धिक रूप अविकसित रहता है। उस अवस्था में मन, शरीर द्वारा नियंत्रित होता है तथा वृत्ति और चित्त उपेक्षित रहते हैं। (मानव व्यवहार दर्शन, पृष्ठ - 140)

ज्ञानावस्था में बुद्धि तीन अवस्था में परिलक्षित होती है:-

अल्प विकसित (अप जागृत) - जीवन में इच्छा पूर्वक विचार एवं आशावादी प्रवृत्ति हो तो उसे अल्प जागृत की संज्ञा दी जाती है। इस दशा में मन, वृत्ति, चित्त तंत्रित होते हैं।

अर्ध विकसित (अर्ध जागृत) - आत्म बोध रहित संकल्प (अवधारणा) पूर्वक इच्छा, विचार व आशा की प्रवृत्ति को अर्ध जागृत की संज्ञा है। इस दशा में मन, वृत्ति व चित्त बुद्धि-तंत्रित होते हैं।

विकसित (जागृत-पूर्ण जागृत) - आत्म बोध सहित संकल्प पूर्वक इच्छा, विचार, आशावादी प्रवृत्ति को जागृत की संज्ञा दी जाती है। इस दशा में मन, वृत्ति, चित्त व बुद्धि आत्मा द्वारा नियंत्रित एवं अनुशासित होते हैं। (मानव व्यवहार दर्शन, पृष्ठ - 141)

4. जीवन और मेधस (शरीर) को समझने की दृष्टि से वर्गीकरण: संपूर्ण अस्तित्व को निम्न 8 अवस्थाओं में देख सकते हैं

1. क्रिया है, पर श्वसन, मेधस और जीवन नहीं है

जैसे जड़ पदार्थ: मिट्टी, पत्थर, जल, वायु आदि।

2. क्रिया व श्वसन है, पर मेधस और जीवन नहीं है

जैसे पेड़-पौधे (जीवित हैं, कोई केंद्रीय नियंत्रण नहीं)।

(कल्पनाशीलता कर्मस्वतंत्रता की अभिव्यक्ति जीवन की महिमा है, न कि शरीर की।)

शरीर: प्राणावस्था की द्रव्य वस्तु, क्रिया से ही सम्पादित हुआ है। यह पूरी रचना प्राणकोशिका प्रधान है। (मानव कर्म दर्शन, 2004 - पृष्ठ 162)

हर प्राणकोशिका में प्राण सूत्र का होना पाया जाता है। इसी में रचना-तत्त्व व पुष्टि-तत्त्व निश्चित मात्रा में समाया रहता है और रचना विधि निहित रहता है। ऐसे प्राणसूत्र अपने में श्वसन क्रिया सम्पन्न रहते हैं। (मानव कर्म दर्शन, 2004 - पृष्ठ 112)

पदार्थावस्था एवं प्राणावस्था की सृष्टि मेधस रहित तथा जीवावस्था व ज्ञानावस्था की सृष्टि मेधस सम्पन्न है। (मानव व्यवहार दर्शन, पृष्ठ - 34)

3. क्रिया, श्वसन व मेधस है, पर जीवन नहीं है

जैसे कीड़े-मकोड़े; ये सभी शरीर, मेधस (brain) द्वारा संचालित होते हैं। इनमें जीवन से रहता ही नहीं है।

जीवात्माओं की शरीर रचना भी प्राणकोशिका समूह से निर्मित होती है। इस रचना में मेधस एक विशिष्ट भाग समाहित रहता है जिसे प्राणावस्था में नहीं पाया जाता है। (पृष्ठ 36, मानव अनुभव दर्शन, 2004)

जिन शरीर में जीवन के संयोग से ही पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ कार्य कर पाती हैं, ऐसे शरीर में समृद्ध मेधस का होना पहचाना जा सकता है। इसके अलावा बाकी सभी प्रकार की रचनाएँ वेदज होना स्पष्ट है। (समाधानात्मक भौतिकवाद, 2009, पृष्ठ 213 - 214)

जब प्राणावस्था अपने में समृद्ध हो जाता है, वैसे ही जीवावस्था का उद्गम, स्वेदज विधि से आरंभ होता है। स्वेदज संसार में पाए जाने वाले कुछ वस्तुओं अथवा जीवों में यह क्रिया देखी गई है कि वह अंडज परंपरा के रूप में परिवर्तित हो गई। जैसे - बिच्छू स्वाभाविक रूप में स्वेदज निर्मित ही है। यह अंडज प्रणाली को त्यक्त कर देता है इसी प्रकार और भी संभावनाएँ बनी हैं। (समाधानात्मक भौतिकवाद, 2009, पृष्ठ 189 - 190)

स्वेदज व असमृद्ध मेधस युक्त रचनाओं को जीवन चलाता नहीं है अथवा वे चलाने योग्य नहीं होते। (समाधानात्मक भौतिकवाद, 2009- पृष्ठ 299)

4. क्रिया है, श्वसन है, समृद्ध मेधस व जीवन है

सप्त धातुओं से रचित समृद्ध मेधस संपन्न मानव शरीर, जीव शरीर इसको जीवन संचालित करता है, जीवंत बना कर रखता है, प्राणावस्था की रचनाएं प्राण कोशाओं से रचित बीजानुषंगी क्रम में स्पष्ट, स्वेदज संसार का शरीर रस से बनी है, रस मांस से बनी हुई है, रस, मांस, मज्जा से बनी हुई है, रस, मांस मज्जा, हड्डी से युक्त बनी हुई है, रस

मांस मज्जा हड्डी स्नायु के साथ बनी हुई है, समृद्ध मेधस न होने के आधार पर ये स्वेदज कहलाते हैं ये सभी अवस्था के शरीर जलचर भूचर नभचर होते हैं। समृद्ध मेधस सम्पन्न जीव शरीर को जीवन संचालित करता है, तभी मानव के संकेतों को ग्रहण करता है (परिभाषा संहिता, पृष्ठ 217)। जीव संसार, समृद्ध मेधस संपन्न शरीर रचना और जीवन का संयुक्त रूप में प्रकाशन, मानव के निर्देशों को अनुकरण करने वाला जीव। जीने की आशा सहित, अस्तित्वशील (परिभाषा संहिता, पृष्ठ 80)। जैसे गाय, हाथी आदि; यहाँ जीवन शरीर (मेधस) के अनुसार कार्य करता है, और इसे वंशानुशंगी कहा गया है। यहाँ जीवन अजागृत है।

इसके स्पष्टीकरण में सप्त धातुओं से रचित शरीर, समृद्ध मेधसतंत्र और मानव के निर्देश संकेत को ग्रहण करने की क्षमता सम्पन्न जीवों में जीवन का होना प्रमाणित होता है। (मानव कर्म दर्शन, 2004 - पृष्ठ 112)

इसी आधार पर किसी - किसी जीव शरीर से सप्त धातुओं का समावेश और सर्वाधिक समृद्ध मेधस रचना सम्पन्न हुई। (मानव कर्म दर्शन, 2004-पृष्ठ 107)

इस आकलन में जिन जीवों के शरीर में जब समृद्ध मेधस की रचना होती है (या हो जाती है) उस स्थिति में ऐसे शरीर को जीवन संचालित करता है। ऐसे शरीर में ही सप्त धातुओं के क्रियाकलाप, एक दूसरे के तालमेल के सहित सम्पन्न हुआ देखने को मिलता है। सप्तधातुएं हैं- 1. रस, 2. मांस, 3. मज्जा, 4. रक्त, 5. स्नायु 6. हड्डी और 7. वसा। (समाधानात्मक भौतिकवाद, 2009 -पृष्ठ 213)

5. क्रिया है, श्वसन है, समृद्धिपूर्ण मेधस है और जीवन भ्रमित है

जैसे अल्प जागृत मानव; जीवन शरीर से प्रभावित होता है, कल्पनाशीलता व्यक्त होती है पर इसका तृप्ति बिंदु नहीं मिलता। इससे पीड़ित रहता है और इससे मुक्त होना चाहता है।

मानव शरीर सर्वोत्तम विकसित रचना इसलिए है कि मानव शरीर में मेधस रचना पूर्णतया विकसित हो चुकी है। (मानव कर्म दर्शन, 2004, पृष्ठ 64)

6. क्रिया है, श्वसन है, समृद्धि पूर्ण मेधस है और जीवन जागृति के लिए पूर्ण संकल्पित हो गया है

जिसे अर्ध जागृत मानव कह रहे हैं।

7. जहाँ जीवन पूर्ण समझ के साथ स्वतंत्र रहते हुए मेधस के माध्यम से शरीर को संचालित करता है

और समझ का प्रमाण अपने व्यवहार और व्यवस्था में प्रस्तुत करता है। ये जागृत मानव हैं।

8. यहाँ जीवन पूर्ण समझ के साथ व्यवहार और व्यवस्था में भागीदारी करता है और समझ का प्रमाण शिक्षा और स्वास्थ्य संयम (कर्म स्वतंत्रता का तृप्ति बिंदु) में प्रमाणित करता है। और अन्य लोगों को जागृत होने के लिए स्रोत बनता है। शिक्षा संस्कार का धारक वाहक बनता है।

अनुभव, प्रमाण, बोध की संप्रेषणा मेधस तंत्र के माध्यम से होता है। यह मानव परंपरा में ही होता है। (मानव व्यवहार दर्शन, 2011- पृष्ठ 48)

इन सारी रचनाओं का क्रम और मानव शरीर के अध्ययन से यह पता लगता है कि मानव शरीर में मेधस रचना की समृद्धि पूर्णतया सम्पूर्ण हुई है। इसका प्रमाण यह है कि मानव में कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता और उसकी तृप्ति के रूप में जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने को मेधस के माध्यम से व्यक्त करने योग्य इकाई है। (मानव कर्म दर्शन, 2004 - पृष्ठ 62)

चैतन्य क्रिया की संकेत ग्रहण करने योग्य क्षमता, योग्यता, पात्रता सहित संप्राण अंग। शरीर रचना में से वह रचना भाग जिस पर जीवन शक्तियों का संकेत प्रसारित होता है। फलस्वरूप शरीर में जीवन्तता प्रमाणित होती है (परिभाषा संहिता - पृष्ठ 155)।

मुख्य विभाजन

वर्गीकरण	अवस्थाएँ	विशेषताएँ
मेधस रहित सृष्टि	पदार्थावस्था (1), प्राणावस्था (2)	अनुभव/प्रमाण/बोध की संप्रेषणा संभव नहीं
मेधस सम्पन्न सृष्टि	जीवावस्था (3-4), ज्ञानावस्था (5-8)	अनुभव, प्रमाण, बोध मेधस तंत्र से संभव

अवस्थाओं का सारणी रूपः

क्र.सं.	अवस्था	क्रिया	श्वासन	मेधस	समृद्ध मेधस	समृद्धि पूर्ण मेधस	अल्प जागृत	अर्ध जागृत	जागृत	पूर्ण जागृत
1	पदार्थ	✓								
2	प्राण	✓	✓							
3	जीव (जीवन रहित)	✓	✓	✓						
4	जीव (जीवन सहित)	✓	✓		✓					
5	ज्ञान (भ्रमित/ अल्प जागृत)	✓	✓			✓	✓			
6	ज्ञान (जागृति के लिए संकल्पित)	✓	✓			✓		✓		

क्र.सं.	अवस्था	क्रिया	श्वसन	मेधस	समृद्ध मेधस	समृद्धि पूर्ण मेधस	अल्प जागृत	अर्ध जागृत	जागृत	पूर्ण जागृत
7	ज्ञान (समझ पूर्ण)	✓	✓			✓			✓	
8	ज्ञान (प्रमाण सहित)	✓	✓			✓				✓

निष्कर्ष

इस शोध पत्र के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जीवन और मेधस- शरीर का संबंध अत्यंत गहन और अविभाज्य है। जीवन एक चैतन्य इकाई के रूप में स्वतंत्र सत्ता रखता है, जबकि मेधस भौतिक-रासायनिक तंत्र है जो जीवन के निर्देशन में कार्य करता है। मध्यस्थ दर्शन इस तथ्य को प्रतिपादित करता है कि जहाँ जीवावस्था में जीवन मेधस से संचालित होता है, वहीं ज्ञानावस्था में जीवन मेधस को संचालित करने लगता है। यही बिंदु मानव को अन्य जीवों से अलग करता है और उसकी विशिष्ट स्थिति को प्रमाणित करता है।

मानव में समृद्धिपूर्ण मेधस की उपस्थिति उसे न केवल कल्पनाशील और विवेकी बनाती है, बल्कि उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक उत्तरदायित्व को भी स्थापित करती है। अल्प-जागृत से पूर्ण-जागृत तक की यात्रा केवल व्यक्तिगत उन्नति की नहीं, बल्कि अखंड मानव समाज की स्थापना की दिशा में एक सामूहिक प्रयास है। इस प्रक्रिया में जीवन की वास्तविक पहचान, आत्मबोध और सहअस्तित्व का दर्शन मार्गदर्शक बनता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि मध्यस्थ दर्शन जीवन और मेधस- शरीर के संबंध की समग्र व्याख्या प्रस्तुत करते हुए आधुनिक विज्ञान और दार्शनिक चिंतन के बीच सेतु का कार्य करता है। यह मनुष्य के लिए आत्मविकास, सामाजिक सामंजस्य और पर्यावरणीय संतुलन की ओर अग्रसर होने का व्यावहारिक मार्ग सुझाता है।

मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

मुख्य बिंदु:

- जीवन एक चैतन्य इकाई है जो भौतिक शरीर से अलग है
- मेधस एक भौतिक तंत्र है जो जीवन के निर्देशन में कार्य करता है
- पदार्थ से लेकर पूर्ण जागृत मानव तक आठ स्पष्ट अवस्थाएं हैं
- मानव में समृद्धिपूर्ण मेधस की उपस्थिति उसे विशिष्ट बनाती है

व्यावहारिक समझ: जीवावस्था में जीवन मेधस से नियंत्रित होता है, जबकि ज्ञानावस्था में जीवन मेधस को नियंत्रित करता है। यही अंतर मनुष्य को अन्य जीवों से अलग करता है और उसकी कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता तथा तृप्ति की खोज को संभव बनाता है।

भविष्य की दिशा: अल्प जागृत से पूर्ण जागृत तक की यात्रा मनुष्य की वास्तविक विकास यात्रा है, जिसमें जीवन अपनी पूर्ण क्षमता को पहचानकर व्यवस्था का स्रोत बनता है।

मुख्य ग्रंथ:

1. नागराज, ए. (2011). *मानव व्यवहार दर्शन*. अमरकंटक: जीवन विद्या प्रकाशन।
2. नागराज, ए. (2004). *मानव कर्म दर्शन*. अमरकंटक: जीवन विद्या प्रकाशन।
3. नागराज, ए. (2004). *मानव अनुभव दर्शन*. अमरकंटक: जीवन विद्या प्रकाशन।
4. नागराज, ए. (2009). *समाधानात्मक भौतिकवाद*. अमरकंटक: जीवन विद्या प्रकाशन।

मुख्य पृष्ठ संदर्भ:

- मानव व्यवहार दर्शन: पृष्ठ 34, 140, 141, 41, 48
- मानव कर्म दर्शन: पृष्ठ 162, 112, 107, 64, 62
- मानव अनुभव दर्शन: पृष्ठ 36
- समाधानात्मक भौतिकवाद: पृष्ठ 48-49, 213-214, 189-190, 299, 213

वैज्ञानिक संदर्भ (Neuroscience / Biology)

1. Kandel, E. R., Schwartz, J. H., & Jessell, T. M. (2013). *Principles of Neural Science* (5th ed.). McGraw-Hill.
2. Bullock, T. H., & Horridge, G. A. (1965). *Structure and Function in the Nervous Systems of Invertebrates*. San Francisco: W. H. Freeman.
3. Strausfeld, N. J. (2012). *Arthropod Brains: Evolution, Functional Elegance, and Historical Significance*. Harvard University Press.
4. Shepherd, G. M. (2016). *Neurobiology* (5th ed.). Oxford University Press.

वेबसाइट संदर्भ:

1. www.jeevanvidya.com
2. <https://madhyasth-darshan.info/>